वामा घर बाजत बधाई....

वामा घर बाजत बधाई, चल देख री माई।
सुगुन रास जग आस भरन, जिन जने पार्श्व जिनराई।
श्री ह्री धृति कीरति बुधि लछमी, हर्ष न अंग समाई ॥१॥

वरन-वरन मणि चूर शची सब, पूरत चौक सुहाई।
हाहा हूहू नारद तुम्बर, गावत श्रुत सुखदाई ॥२॥

ताण्डव नृत्य नटत हरि नट तिन, नख-नख सुरीं नचाई।
किन्नर कर धर बीन बजावत, दृग मनहर छवि छाई ॥३॥

'दौल' तासु प्रभु की महिमा सुर-गुरु पै कहिय न जाई।
जाके जन्म समय नरकन में, नारकि साता पाई ॥४॥

– कविवर दौलतरामजी

ध्रुवोक्ति-

दानेन भोगाः सुलभा नराणां, दानेन तिष्ठन्ति यशांसि लोके।
दानेन वश्या रिपवो भवन्ति, तस्मात्सुदानं सतं प्रदेयम्॥

दान से मनुष्यों को भोग सुलभ होते हैं, दान से लोक में यश स्थिर रहते हैं और दान से शत्रु वशीभूत होते हैं अतः सदा सुदान देना चाहिए।

तुझ जैसा कोई धनवान नहीं है !!

अरे भाई! तुझ जैसा कोई धनवान नहीं है ! तेरे भीतर परमात्मा विराज रहे हैं इससे अधिक धनवानपना क्या होगा? ऐसा परमात्मपना सुनकर उसे अंतर से उल्लास आना चाहिए। उसकी लगन लगनी चाहिए। उसके लिये पागल हो जाना चाहिये। ऐसे परमात्मस्वरूप की धुन लगना चाहिये। सच्ची धुन लगे तो जो स्वरूप है वह प्रगट हुए बिना कैसे रहेगा? अवश्य प्रगट होगा ही। **– आ.स. श्री कानजीस्वामी**

सहयोग जगत

परम संरक्षक –

श्री धुलजीभाई ज्ञायक, बांसवाडा
श्री अमृतलाल एम. शाह, मलाड-मुम्बई
सुशीला बेन बी. मेहता, मलाड-मुम्बई
रमणलाल नेमचंद शाह, मलाड-मुम्बई
डॉ.वासन्तीबेन शाह, मुम्बई
श्री जयकुमार जैन, रतलाम
श्री आनन्दकुमार अजमेरा, रतलाम
श्री सी. एस. जैन, देहरादून
श्रीमती जीजीबाई पुष्पलता
ध.प. श्री अजितकुमार जैन, छिन्दवाडा
पं. सिद्धार्थ कुमार दोसी, रतलाम

संरक्षक -

श्री कस्तूरचंद सिंघवी, उदयपुर
श्री भागचंद जैन कालिका, उदयपुर
श्री श्याम शाह, उदयपुर
श्री वीरेन्द्र मथुरालाल भलावत, इन्दौर
श्रीमती निधि ध.प. स्व. श्री मलय भवानजी रतलाम
श्री प्रकाशचन्द छाबड़ा, सूरत
श्रीमती शकुंतला पाटनी ध.प.
श्री बाबूलाल पाटनी कोलकाता
श्री विपिनभाई वादर, जामनगर

परम सहायक -

श्रीमती कंचनबेन चंदूलाल शाह, मलाड
श्रीमती कस्तूरीबाई खाबिया, मन्दसौर
श्रीमती मन्जुला बाकलीवाल, कोटा

सहायक -

पण्डित नरेन्द्रकुमार जैन, जबलपुर
श्री बाबूलाल जेठालाल शाह, हिम्मतनगर

'ध्रुवधाम' पत्रिका के निर्बाध प्रकाशन हेतु आप से सहयोगी बनने हेतु सादर अनुरोध है –

परम संरक्षक - १५ हजार रुपये
संरक्षक - ११ हजार रुपये
(प्रत्येक माह में नाम प्रकाशित किये जायेंगे ।)
परम सहायक - ७ हजार रुपये
सहायक - ५ हजार रुपये
(प्रत्येक ३ माह में नाम प्रकाशित किये जायेंगे ।)

जिन्होंने पत्रिका का सदस्यता शुल्क जमा नहीं करवाया है, वह कृपया १००रु. त्रिवर्षीय ५०० रु.पन्द्रह वर्षीय सदस्यता शुल्क भेज कर सहयोग प्रदान करें ।

आप अपनी सहयोग राशि बैंक आफ बड़ोदा, ठीकरिया-बाँसवाड़ा के श्री ज्ञायक चेरीटेबल ट्रस्ट के खाता संख्या 15880100001077 में जमा करा सकते हैं । समाचार एवं अन्य सूचनायें dhruvraj1008@rediffmail.com पर भेज सकते हैं । – **प्रबन्ध सम्पादक**

पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के समस्त ओडियो-विडियो प्रवचन, साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –

वेबसाइट - vitragvani.com

सम्पर्क सूत्र – श्री कुंद-कुंद कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
PH : 022-26130820, 26104912
Email Address :
info@vitragvani.com,

विषापहार-प्रवचन

(महाकवि धनंजय विरचित 'विषापहार स्तोत्र' पर श्रीकानजीस्वामी के प्रवचन)

काव्य-१८

क्वोपेक्षकस्त्वं क्व सुखोपदेशः,
स चेत्किमिच्छाप्रतिकूलवादः।
क्वासौ क्व वा सर्वजगत्प्रियत्वं,
तन्नो यथातथ्यमवेविचं ते॥

कहाँ तुम्हारी वीतरागता,
कहाँ सौख्य कारक उपदेश।
हो भी तो कैसे बन सकता,
इन्द्रिय-सुख विरुद्ध आदेश॥
और जगत को प्रियता भी तब,
सम्भव कैसे हो सकती।
अचरज, यह विरुद्ध गुणमाला,
तुममें कैसे रह सकती॥

अन्वयार्थ – हे प्रभु! **(उपेक्षकः त्वम् क्व)** कहाँ राग-द्वेषरहित आप? और **(सुखोपदेशः क्व)** कहाँ सुख का उपदेश देना? **(चेत्)** यदि आप **(सः)** सुख का उपदेश देते हैं, **(तर्हि)** तो आपका **(इच्छाप्रतिकूलवादः)** इच्छा के विरुद्ध बोलना ही कहाँ है? अर्थात् आपके इच्छा नहीं है – ऐसा कथन क्यों किया जाता है? **(असौ क्व)** कहाँ इच्छा के अभाव में बोलना? **(वा)** और **(सर्वजगत्प्रियत्वम्)** कहाँ सब जीवों का प्रिय होना? इस तरह आपकी प्रत्येक बात में विरोधाभास है; **(तत्)** अतः मैं **(ते यथातथ्यम् नो अवेविचम्)** आपकी वास्तविकता, आपके असली रूप का विवेचन नहीं कर सकता।

भावार्थ – हे भगवन्! जब आप राग-द्वेष से रहित हैं तो किसी को सुख का उपदेश कैसे देते हैं? यदि सुख का उपदेश देते हैं तो इच्छा के बिना कैसे उपदेश देते हैं? यदि इच्छा के बिना उपदेश देते हैं तो जगत् के सब जीवों को प्रिय कैसे हैं? इस तरह आपकी सब बातें परस्पर विरुद्ध हैं। वस्तुतः आपकी असलियत को कोई नहीं जान सकता।

काव्य १८ पर प्रवचन

देखो! भक्तिभावयुक्त कविवर के हृदय से प्रवाहित हृदयोद्गार!

हे प्रभु! आप राग-द्वेष विहीन हैं, अतः आपके किसी प्रकार की इच्छा अवशेष नहीं है, फिर भी आप भव्यजीवों को सुख का उपदेश प्रदान करते हैं।

यद्यपि आप वीतराग हैं, तथापि अपनी दिव्यध्वनि द्वारा जीवों के अनादिकालीन दुःख की निर्वृत्ति एवं सच्चे सुख की उपलब्धि का उपाय बतलाते हैं। इस प्रकार आपकी प्रवृत्ति में परस्पर विरोध सा लगता है कि आप इच्छा विहीन हैं तथापि आप उपदेश देते हैं – यह आपकी प्रवृत्ति विचित्र सी लगती है।

आपको इच्छा नहीं है, फिर भी इच्छावालों को आप उपदेश देते हैं। इच्छावाले बाह्य में सुखाभिलाषा करते हैं, उन्हें आप यह उपदेश देते हैं कि 'बाह्य में सुख नहीं है' – आपका यह उपदेश यद्यपि जीवों की (मान्यता) से विरुद्ध है, उन इच्छावान जीवों को वह रुचिकर प्रतीत होता है। आप उन्हें उनके अभिप्राय से विरुद्ध उपदेशदाता होने पर भी प्रिय लगते हैं। प्रभु ! आपकी यह स्थिति बहुत ही अटपटी लगती है, क्योंकि इच्छा (मान्यता) विरुद्ध उपदेश दाता तो शत्रु सा प्रतीत होता है किन्तु आप जगत को प्रिय हैं।

हे प्रभु ! आप इच्छा रहित होने पर भी इच्छा के अभाव की प्रेरणा देनेवाला आपका उपदेश धाराप्रवाह निकलता है। हे प्रभु ! आपकी बलिहारी है। आपको इच्छा का अभाव होने पर भी इच्छावालों को आपका उपदेश है अर्थात् उनकी इच्छा के विरुद्धता का उपदेश है कि 'इच्छाओं का अभाव करो' – इस प्रकार सामने स्थित जीवों की इच्छा के विरुद्ध (मान्यता विरुद्ध) उपदेश प्रदाता होने पर भी आपका उपदेश सुनने के लिए जीव तरसते हैं। इस प्रकार हे भगवान ! आपका स्वरूप अद्भुत आश्चर्यकारी है। मैं तो आपके वास्तविक स्वरूप को जानने में असमर्थ हूँ।

प्रभो ! वाणी तो व्यभिचारिणी है, उसके द्वारा चैतन्य की महिमा का कथन नहीं हो सकता, किन्तु विकल्पातीत होने पर ही चैतन्य की महिमा का परिज्ञान हो सकता है।

काव्य-१९

तुंगात्फलं यत्तदकिंचनाच्च,
प्राप्यं समृद्धान्न धनेश्वरादेः।
निरम्भसोऽप्युच्चतमादिवाद्रे-
र्नैकापि निर्याति धुनी पयोधेः॥

तुम समान अति तुंग किन्तु,
निधनों से जो मिलता स्वयमेव।
धनद आदि धनिकों से वह फल,
कभी नहीं मिल सकता देव॥
जल विहीन ऊँचे गिरिवर से,
नाना नदियाँ बहती हैं।
किन्तु विपुल जलयुक्त जलधि से,
नहीं निकलती, झरती हैं॥

अन्वयार्थ – **(तुंगात् अकिंचनात् च)** उदार चित्तवाले दरिद्र मनुष्य से भी **(यत्फलम्)** जो फल **(प्राप्यं अस्ति)** प्राप्त हो सकता है, **(तत्)** वह **(समृद्धात् धनेश्वरादेः न)** सम्पत्तिवाले धनाढ्यों से नहीं प्राप्त हो सकता है। ठीक ही तो है **(निरम्भसः अपि उच्चतमात् अद्रेः इव)** पानी से शून्य होने पर भी अत्यन्त ऊँचे पहाड़ के समान, **(पयोधेः)** समुद्र से **(एका अपि धुनि)** एक भी नदी **(न निर्याति)** नहीं निकलती है।

भावार्थ – पहाड़ के आस-पास पानी की एक बूँद भी नहीं है, परन्तु उसकी प्रकृति अत्यन्त उन्नत है; इसलिए उससे कई नदियाँ निकलती हैं, परन्तु समुद्र से जो कि पानी से लबालब भरा रहता है, एक भी नदी नहीं निकलती। इसका कारण समुद्र में ऊँचाई का अभाव है। भगवन्! मैं जानता हूँ कि आपके पास कुछ भी नहीं है, परन्तु आपका हृदय पर्वत की तरह उन्नत है, दीन नहीं है; इसलिए आपसे हमें जो चीज मिल सकती है, वह अन्य धनाढ्यों से नहीं मिल सकती, क्योंकि समुद्र के समान वे भी ऊँचे नहीं हैं अर्थात् कृपण हैं।

काव्य १९ पर प्रवचन

हे भगवन् ! जो फल उदारचित्त युक्त गरीब मनुष्य से प्राप्त हो सकता है, वह सम्पत्तिशाली लोभी मनुष्यों से कदापि प्राप्त नहीं हो सकता – यह एक सत्य तथ्य है, क्योंकि विशाल एवं ऊँचे पर्वतों में यद्यपि जल की बिन्दु भी नहीं होती है तथापि विशाल नदियाँ इन्हीं में से प्रवाहित होती हैं, जबकि जल से परिपूर्ण समुद्र में से एक भी नदी प्रवाहित नहीं होती।

इसी प्रकार हे नाथ ! यद्यपि आपके पास कुछ भी नहीं है अर्थात् आप सर्व परिग्रहों से परिमुक्त हैं, वीतराग हैं; तथापि आपका हृदय पर्वत की भाँति उन्नत है, इस कारण आपसे हमें जो प्राप्त होता है, वह न तो विशाल क्षयोपशमवालों से ही प्राप्त हो सकता है और न अर्द्धलोक के अधिपति इन्द्र से ही प्राप्त हो सकता है।

जहाँ केवलज्ञान पर्यायरूप से परिणमित हो रहा है, वहाँ लेन-देन की वृत्ति ही नहीं है, तथापि बिना इच्छा ही दिव्यध्वनिरूपी अमृत बरसता है। पर्वत से प्रवाहित नदी की भाँति उन्नत प्रकृति युक्त आपसे ही जगत के जीवों का सर्वस्व प्राप्त होता है।

जल से परिपूर्ण समुद्र में से जैसे एक भी नदी प्रवाहित नहीं होती, अपार संपत्ति के स्वामी कंजूस से जगत को कुछ भी प्राप्त नहीं होता; इसी प्रकार जिन्हें ज्ञान का

शेष पृष्ठ १९ पर...

नय रहस्य

(नयों को समझने के लिए उपयोगी)

गतांक से आगे ....

(स) एकदेश शुद्ध निश्चयनय :-

आंशिक शुद्धपर्यायरूप परिणमित द्रव्य को पूर्ण शुद्धरूप देखनेवाला नय एकदेश शुद्ध निश्चयनय है। बृहद् द्रव्य संग्रह गाथा-५६ की टीका में परमध्यान में स्थित जीव को निश्चय मोक्षमार्ग स्वरूप, परमात्म स्वरूप, परमजिन स्वरूप आदि विशेषणों से सम्बोधित किया गया है। यहाँ टीका का वह अंश दिया जा रहा है :-

'उस परमध्यान में स्थित जीव को जिस वीतराग परमानन्दरूप सुख का प्रतिभास होता है, वही निश्चय मोक्षमार्ग स्वरूप है। .....वही शुद्धात्म स्वरूप है, वही परमात्मस्वरूप है, वही एकदेश प्रगटतारूप विवक्षित एकदेश शुद्ध निश्चयनय से स्वशुद्धातम के संवेदन से उत्पन्न सुखामृतरूपी जल के सरोवर में रागादिमल रहित होने के कारण परमहंसस्वरूप है। इस एकदेशव्यक्तिरूप शुद्धनय के व्याख्यान को परमात्म ध्यान की भावना की नाममाला में जहाँ कथन है, वहाँ परमात्म ध्यान भावना से परब्रह्म स्वरूप, परमविष्णुस्वरूप, परम शिव रूप, परमजिनस्वरूप आदि अनेक नाम गिनाये गए हैं। उन्हें परमात्मतत्त्व के ज्ञानियों द्वारा जानना चाहिए।'

आँशिक शुद्धपर्यायरूप परिणमित आत्मा अथवा आँशिक शुद्धपर्याय भी एकदेश शुद्धनय का विषय बनती है। स्वभावदृष्टि से अनन्तज्ञान सुख आदि शक्तियों का अखण्ड पिण्ड होने पर भी उसे एकदेश पर्याय की मुख्यता से ज्ञानी, सम्यग्दृष्टि, श्रावक, साधु आदि भूमिकाओं की अपेक्षा इन नामों से सम्बोधित किया जाता है।

तत्संबंधी कुछ उद्धरण इस प्रकार हैं –

१. कम्मस्स य परिणामं
णोकम्मस्स य तहेव परिणामं।
ण करेइ एयमादा
जो जाणदि सो हवदि णाणी॥

– आचार्य कुन्दकुन्द : समयसार गाथा-७५

२. क्षणभर निजरस को पी चेतन
मिथ्यामल को धो देता है।
काषायिक भाव विनष्ट किए
निज आनन्द अमृत पीता है॥

– 'युगलजी' कृत देवशास्त्रगुरु पूजन

३. भेद विज्ञान जग्यो जिनके घट,
शीतल चित्त भयो जिमि चंदन।
केलि करें शिवमारग में,
जगमांहिं जिनेश्वर के लघुनन्दन॥
सत्यस्वरूप सदा जिनके,
प्रगट्यो अवदात मिथ्यात निकंदन।
शान्त दशा तिनकी पहचान,
करै करजोरि बनारसी वंदन॥

– पं. बनारसीदास : ना. समयसार ७५

प्रश्न :- आँशिक शुद्ध पर्याय से तन्मय आत्मा को एकदेश शुद्ध निश्चय नय का विषय कहना तो ठीक है, परन्तु आँशिक शुद्ध अवस्था को पूर्ण शुद्ध कहना सत्य कैसे हो सकता है?

उत्तर :- प्रत्येक नय अपनी अपेक्षा से जो भी कथन करता है, सम्पूर्ण द्रव्य के बारे में ही करता है। नयों की परिभाषा के प्रकरण में भी यह स्पष्ट किया गया था कि वस्तु के एकदेश में वस्तु का निश्चय करना ही अभिप्राय) नय है और ज्ञाता का अभिप्राय ही नय है।

जिस प्रकार परम शुद्धनय, पर्यायगत अशुद्धता को गौण करके द्रव्य को शुद्ध कहता है, और अशुद्धनय आँशिक शुद्धता को गौण करके द्रव्य को अशुद्ध कहता है, इसी प्रकार एकदेश शुद्धनय भी आँशिक शुद्धपर्याय में विद्यमान अशुद्धता के अंश को गौण करके उसे पूर्ण शुद्ध कहता है।

प्रश्न- पर्यायगत शुद्धता-अशुद्धता को गौण करना अलग बात है और आँशिक शुद्ध पर्याय को पूर्ण शुद्ध कहना अलग बात है। क्या लोक में अथवा जिनागम में ऐसे प्रयोग उपलब्ध होते हैं ?

उत्तर :- हाँ ! (१) शहर के किसी एक मकान में आग लगने पर उस शहर में आग लग गई – ऐसा प्रचलित है ही। इसी प्रकार (२) एल.एल.बी. के प्रथम वर्ष में प्रवेश लेने पर उस विद्यार्थी को लोग वकील साहब कहने लगते हैं। (३) हम नगर के एक छोटे से हिस्से में रहते हुए भी अपने को उस नगर/प्रान्त/देश में रहने वाला कहते हैं। न केवल कहते हैं, अपितु वैसा अनुभव करते हैं। (४) किसी समाज में कुछ व्यक्ति सज्जन होशियार या विद्वान् हों तो सारी समाज को वैसा कहा जाता है।

ये तो हुए लोक में प्रचलित कुछ प्रयोग। बृहद् द्रव्यसंग्रह गाथा ८ की टीका में छद्मस्थ जीव को एकदेश शुद्ध निश्चयनय से भावनारूप से विवक्षित अनन्तज्ञान सुख आदि का कर्त्ता और मुक्त अवस्था में शुद्धनय (साक्षात् शुद्धनय से) अनन्तसुख आदि का कर्त्ता

कहा है। वह अंश इस प्रकार है :-

'जब जीव शुभ-अशुभरूप तीन योग के व्यापार से रहित , शुद्ध-बुद्ध-एकस्वभावरूप से परिणमन करता है, तब छद्मस्थ अवस्था में भावनारूप से विवक्षित अनन्तज्ञान-सुखादि शुद्ध भावों का एकदेश शुद्ध निश्चयनय से कर्त्ता है और मुक्त-अवस्था में अनन्त ज्ञान-सुखादिभावों का शुद्धनय से कर्त्ता है।'

इस सन्दर्भ में यह बात गहराई से विचारणीय है कि जब छद्मस्थ जीव को निर्विकल्प अनुभूति प्रगट होती है, तब वह उसमें आने वाले अतीन्द्रिय आनन्द के स्वाद में मग्न रहता है; न कि वह कितना है, अधूरा है या पूरा है – ऐसे विकल्प करता है। जरा सोचिये ! चतुर्थ गुणस्थानवर्ती ज्ञानी जब यदि निर्विकल्प स्वानुभूति में मग्न हों तब क्या उन्हें मैं चतुर्थ गुणस्थान में हूँ, अभी यह आनन्द अधूरा है, अभी तो तीन कषाय चौकड़ी का सद्भाव है.... इत्यादि विकल्प होते होंगे ? नहीं। वे तो पूर्ण-अपूर्ण के विकल्प रहित उस आनन्द के स्वाद में ही मग्न रहते हैं। अतः उन्हें भावना की अपेक्षा एकदेश शुद्ध निश्चयनय से अनन्तज्ञान सुख आदि का कर्त्ता-भोक्ता कहने की विवक्षा समझी जाए तो यह कथन अनुचित नहीं लगेगा। (क्रमशः)

– पण्डित अभयकुमार जैन, देवलाली

संसाररूपी रंगभूमि

जिनको भाग्यवश धन मिलता है वे आनंद से हंसते हैं, दैववश जिनका धन चला जाता है, वे शोकाकुल होकर रोते हैं। जिनको कुछ बुद्धि-क्षयोपशम प्राप्त है वे शास्त्रों को पढ़ते हैं। जिनको बुद्धि-क्षयोपशम नहीं, वे निरन्तर प्रमाद में-नींद लेने में जीवन को खोते हैं। जो मुनिश्रेष्ठ संसार से विरक्त होते हैं, वे तपोवन में जाकर तप (आत्मध्यान) करते हैं, आत्मसाधना करते हैं। जो विषयों के अनुरागी हैं वे पंचेन्द्रिय विषयों में ही रमते हैं। इसप्रकार यह जीव इस संसाररूपी रंगभूमि पर नट के समान विविध क्रिया करता रहता है।

– सुभषित रत्न संदोह

सूचना/निवेदन

हम 'ध्रुवधाम' के आगामी अंकों के मुख्य पृष्ठ पर पूज्य गुरुदेवश्री की उपस्थिति में या उनके प्रभावना योग में निर्मित जिनमन्दिर/स्वाध्याय भवन के चित्र उनके संक्षिप्त परिचय के साथ प्रकाशित कर रहे हैं। अतः आपसे निवेदन है कि आप प्रतिष्ठा तिथि, प्रतिष्ठाचार्य, मूलनायक, अन्य सुविधायें/विशेषतायें, सम्पर्क सूत्र संबंधी जानकारी कृपया शीघ्र भिजवाने का श्रम करें।

– पोष्ट-कूपड़ा, जिला बांसवाड़ा (राज.)

शुद्ध-चिद्रूपाय नमः

धर्मानुरागी बन्धुजन !

निष्काम यथायोग्य।

आप सबका उत्साहपूर्ण आग्रह होने पर भी कार्यक्रम न बन सका, सो खेद नहीं करना और न निराश होना। धर्माराधन तो अत्यन्त निरपेक्ष भाव से ही होता है।

अतः भवितव्य का विचार कर , समतापूर्वक तत्त्वाभ्यास में उद्यमी रहना। विचार करना कि जब प्रशस्त राग भी निस्सार है, आकुलतामय है, तो अप्रशस्तराग सुखमय कैसे होगा? जब साधर्मीजन ही शरणभूत नहीं हैं, तो लौकिकजन कैसे शरणभूत होंगे ? वास्तव में सर्व ओर से दृष्टि हटाकर, अन्तर्मुख होना ही श्रेयस्कर है।

अहो ! पंचेन्द्रिय भोगों से युक्त, गृहस्थ मार्ग में तो सुख की कल्पना ही दावाग्नि के समान भयावह है। धन्य हैं वे ज्ञानी ! जिन्होंने इस जंजाल को स्वीकार ही नहीं किया। समस्त जीवन तत्त्व की आराधना में समर्पित कर, निजपद को पा लिया। हमें भी समस्त दुर्विकल्पों को छोड़कर, आनन्द एवं उल्लासपूर्वक, स्व के बल पर, निवृत्ति के मार्ग में अग्रसर होना ही श्रेयस्कर है।

भाई ! उपादान की योग्यता के अनुसार, निमित्त भी सहज ही बनते जायेंगे और फिर हमें निमित्तों की अपेक्षा ही क्या? सम्यक्त्व से लेकर, सिद्धपद तक प्राप्त करने की पूर्ण सामर्थ्य स्वयं में है। परलक्ष्य से तो, संसार भ्रमण का कारण रूप विभाव होता है। स्वाभाविक परिणमन तो निरपेक्ष, स्वाधीन एवं सहज होता है।

अरे ! संयोग नहीं है, तो हमें संयोगों की आवश्यकता ही क्या है? विकल्पों से बस हो। ब्रह्मचर्य के मार्ग में, परलक्ष्य से विकल (व्याकुल) होने के लिए अवकाश ही कहाँ ? निशंक हो, स्वरूप रमणता का पुरुषाार्थ करें।

हम तो उन प्रभु के अनुयायी हैं, जो पर की ओर देखते ही नहीं। उन गुरुओं के भक्त हैं, जो पर सहाय की वांछा से रहित हैं। उस जिनवाणी के सपूत हैं, जो स्वावलंबन सिखाती है।

साभार- स्वानुभव पत्रावली (पत्रांक-२)

पृष्ठ १८ का शेष.....

नहीं करते; और जिंदगी के अंतिम क्षण में पता चलता है कि मैंने जीवन भर मूर्खता की है। पर अब पछताने से क्या फायदा। हमारे पास जागने/समझने का अभी भी अवसर है।

प्रस्तुति- विपाशा जैन 'ध्रुवधाम'

विविध जगत -

अध्यात्म के संस्कार

संस्कार किसी भी समाज की वास्तविक सम्पत्ति होते हैं। संस्कारों के बिना किसी भी व्यक्ति के जीवन में, घर, समाज और देश में शांति की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। यह तो निर्विवाद ही है कि जो भी लौकिक या धार्मिक संस्कार होते हैं, वह मनुष्य पर्याय के आभूषण रूप होते हैं। इन संस्कारों रूपी आभूषणों से सुशोभित व्यक्ति स्वयं तो शांतिमय जीवन जीता ही है वरन् उसके निमित्त से उसके घर, समाज और देश में सर्वत्र शांति ही होती है।

परन्तु इतना सब होने पर भी 'अध्यात्म के संस्कार' बिना अर्थात् निज ज्ञान स्वभावी आत्मा के सम्यक् परिज्ञान के बिना दिखाई देने वाली यह शांति 'तूफान के पहले होने वाली शांति' के समान ही होती है। जैसे ही उदय बदलता है यह जीव अनंत दुःखों को भोगते पुनः क्षुद्र योनियों में पहुँच जाता है। दिगम्बर जैनाचार्यों, विद्वानों ने अपने ग्रन्थों, बारह भावनाओं आदि में आत्मज्ञान से चूकने की बात, उसके दुष्परिणाम को बहुत ही खेदपूर्वक और प्रेरणास्पद रीति से वर्णित किया है।

जैन समाज में अति लोकप्रिय और सरलतम ग्रन्थ छहढ़ालाजी में कहा है-

'जो विमानवासी हू थाय,
सम्यग्दर्शन बिन दुःख पाय।
तहँ तैं चय थावर तन धरै,
यों परिवर्तन पूरे करे॥'

'आतम-अनात्म के ज्ञानहीन,
जे-जे करनी तन करन छीन।'

लौकिक या स्थूल पुण्य क्रिया-भावरूप धार्मिक संस्कार तो दूर आत्म ज्ञान के अभाव में शास्त्रज्ञान, भेदरूप सात तत्त्वों का श्रद्धान और दिगम्बर साधु बनकर पाँच पापों के त्यागपूर्वक होने वाला संयमपना यह तीनों मिलकर भी किंचित् मात्र कर्मों का नाश नहीं करते अर्थात् यह जीव संसार में भटकता हुआ दुःखी ही बना रहता है। जबकि अध्यात्म के संस्कारों द्वारा आत्मज्ञान करनेवाला जीव अत्यल्प समय में अनंत कर्मों का नाश कर अनंत सुखी हो जाता है। इसी बात को वस्तु व्यवस्था दर्शानेवाले, आत्मा के द्रव्य-गुण-पर्याय का ज्ञान करानेवाले श्रेष्ठ ग्रन्थ 'प्रवचनसारजी' की २३८वीं गाथा में कुन्दकुन्दाचार्य देव इन शब्दों में लिखते हैं – 'जो कर्म अज्ञानी शत-सहस्रकोटि भवों में अर्थात् (१०) खरब भवों में नष्ट करता है वह कर्म आत्मज्ञान से तीन प्रकार से गुप्त होने

से उच्छवास मात्र में ही नष्ट हो जाते हैं निष्कर्षतः सभी सुखार्थी, आत्मार्थी जीवों को एक भी पल गँवाये बिना सर्वप्रथम अध्यात्म के संस्कारों से अपने ज्ञान-श्रद्धान-चारित्र की पर्यायों को संस्कारित करना चाहिए।

अध्यात्म क्या है?

अध्यात्म के संस्कारों से संस्कारित होने के लिए हमें यह जानना परमावश्यक है कि अध्यात्म क्या है?

सूत्रपाहुड़ ग्रन्थ की वचनिका में पं. श्री जयचन्दजी छाबड़ा ने लिखा है – **'जहाँ एक आत्मा के आश्रय निरूपण करिये सो अध्यात्म है।'**

इसी तरह श्री बृहद् द्रव्यसंग्रह ग्रन्थ की टीका में श्री ब्रह्मदेव सूरि लिखते हैं **'मिथ्यात्व-रागादि समस्त विकल्प समूह के त्याग द्वारा निज शुद्धात्मा में जो अनुष्ठान-प्रवृत्ति है उसे अध्यात्म कहते हैं।'**

दोनों परिभाषाओं के आधार से ज्ञात होता है स्वयं को आत्मा या शुद्धात्मा अनुभव करना ही अध्यात्म है जिसके फलस्वरूप मिथ्यात्व व रागादि विकल्पों का अभाव हो जाता है।

जिन अध्यात्म के प्रतिष्ठापक आचार्य कुन्दकुन्ददेव लगभग २००० वर्ष पूर्व रचित अपने परम आध्यात्मिक ग्रंथाधिराज समयसारजी की गाथा ६ एवं ७ में अध्यात्म के शिखर को छूते हुए शुद्धात्मा के स्वरूप को इस तरह अवतरित करते हैं –

'जो ज्ञायकभाव (शुद्धात्मा) है वह अप्रमत्त (शुद्धपर्यायोंरूप) एवं प्रमत्त (शुभ-अशुभभाव रूप अशुद्धपर्यायों रूप) नहीं होता और न ही शुद्धात्मा चारित्र-दर्शन-ज्ञानादि धर्मों (गुणों) के भेद रूप होता अर्थात् शुद्धात्मा तो सदा ही समस्त पर्यायों से पार अपरिणामी और गुणों के भेद से रहित अभेद तत्त्व होने से सदा ही शुद्ध है।

अहो ! अद्भुत है अध्यात्म जो हमें भगवान बताता है। आत्मा सदा आत्मा बना रहता है कभी भी पर और पर्यायोंरूप नहीं होता, इस तरह स्व से अभिन्न और पर से भिन्न होने से सदा शुद्ध है। इसी तरह शाश्वत अकृत्रिम वस्तु होने से उसे किसी ने बनाया नहीं है, कोई उसका नाश नहीं कर सकता, अपरिणामी होने से वह किसी भी पर्याय का कर्त्ता-भोक्ता नहीं है और न ही किन्हीं पर्यायों से वह अच्छा-बुरा होता है, यही इसका भगवानपना है।

शंका- आत्मा अभी शुद्ध और भगवान कैसे है? अभी तो प्रत्यक्ष में

शरीरादि संयोग, कर्मबंधन, समस्त विकारी भावोंरूप अशुद्धता विद्यमान है। इसका नाश होने पर ही आत्मा शुद्ध होगा, भगवान बनेगा?

समाधान- नहीं भाई ! आत्मा का परमार्थस्वरूप ऐसा नहीं है, आत्मा के परमार्थ स्वरूप को जानने के लिए ही तो अध्यात्म के संस्कारों की आवश्यकता है। अध्यात्म के संस्कारों से रहित होने से ही अनादिकाल से आज तक शरीरादिरूप ही अपने को जाना-माना है, आज दुर्लभतम संयोग मिला है जिसमें हमें अध्यात्म ग्रन्थों से भेदविज्ञान की कला सीखकर अध्यात्म के संस्कार सीखना योग्य है।

क्या हैं अध्यात्म के संस्कार?

वस्तुतः भेदविज्ञान होना ही अध्यात्म के संस्कार हैं। भेदविज्ञान अर्थात् रहस्य का विशेषज्ञान, वस्तु स्वरूप का यथार्थ ज्ञान, मैं शुद्धात्मा हूँ ऐसा ज्ञान।

शरीरादि संयोग हैं यह सत्य है, पर मैं इनसे भिन्न निष्कर्म आत्मा हूँ। **– यह परम सत्य है।**

रागादि विकारी भाव हैं यह सत्य है, पर मैं इनसे भिन्न अविकारी आत्मा हूँ **– यह परम सत्य है।**

परिणाम परिणमते हैं यह सत्य है, परन्तु मैं उनसे भिन्न ध्रुव, अपरिणामी, ज्ञायक बना रहता हूँ **– यह परम सत्य है।**

इस तरह सबके बीच में रहनेवाले परन्तु सबसे भिन्न निराले आत्मा को, उसके इस परम सत्य को जानना ही अध्यात्म के संस्कार हैं, भेदविज्ञान की परमकला है, रहस्य का विशेषज्ञान है, वस्तुस्वरूप का यथार्थज्ञान है।

आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजी स्वामी इसी सत्य को एक वाक्य में इस तरह कहते थे 'एक ओर भगवान आत्मा राम, दूसरी शेष ग्राम।'

इसी तरह का भाव आदरणीय ब्र.रवीन्द्रजी ने अपनी रचना 'परमार्थ शरण' में इन पंक्तियों में व्यक्त किया है–

'मत देखो संयोगों को, कर्मोदय मत देखो।
मत देखो पर्यायों को गुणभेद नहीं देखो॥
अहो देखने योग्य एक ध्रुव ज्ञायक प्रभु देखो।
हो अंतर्मुख सहज दीखता अपना प्रभु देखो॥'

जो ज्ञान अनादिकाल से संयोगों, कर्मोदय और पर्यायों का लक्ष्य करनेवाला था, वही 'ज्ञान' इन आध्यात्मिक ग्रंथों, रचनाओं से जिन अध्यात्मरूपी अमृत का पान करता हुआ सहज अंतर्मुख होकर एक शुद्ध ज्ञायक प्रभु का लक्ष्य करता है।

'भेदज्ञान ही संवर का उत्कृष्ट उपाय है' – अमृतचन्द्राचार्यदेव के इन अमृतमयी वचनानुसार 'ज्ञान' ही सारे आध्यात्मिक संस्कारों का मूल सिद्ध होता है।

जब 'ज्ञान' ज्ञायक का स्वरूप समझता है तब श्रद्धा में ज्ञायक का सच्चा विश्वास जन्मता ही है और चारित्र में आत्मिक आनंद प्रगटता ही है। इन भावों को जिनागम की भाषा में सम्यग्दर्शन ज्ञानचारित्राणि मोक्षमार्गः कहते हैं। इस अभेदरूप मोक्षमार्ग में अस्ति-नास्ति से भेदरूप प्रवर्तनमान ऐसे होते हैं –

'अध्यात्म के संस्कार' ...

अ- शुद्धात्मा हूँ जानकर, शुद्धात्मा के विश्वासपूर्वक, शुद्धता का आनंद आना।

ध्या- प्रभुतामयी हूँ जानकर, पामरता का भ्रम मिटकर, पामरता की वृत्ति न होना।

त्म- अविनाशी हूँ जानकर, जन्म मरण की भ्रान्ति मिटकर, निर्भय परिणति प्रगटना।

के- ज्ञाता हूँ जानकर, कर्त्तापने की भ्रान्ति मिटकर, निर्भार परिणति प्रगटना।

सं- असंयोगीतत्त्व हूँ जानकर, असंयोगीपने के विश्वासपूर्वक, संयोगों की उपेक्षा।

स्का- अविकारी हूँ जानकर, विकारी हूँ का भ्रम छूटकर, विकारमात्र की चिन्ता न होना।

र- अभेद हूँ जानकर, भेद की दृष्टि छूटकर, निर्विकल्पता उत्पन्न होना।

हैं- अपरिणामी हूँ जानकर, पर्याय दृष्टि छूटकर, पर्यायों में राग-द्वेष न होना।

इन अध्यात्म के संस्कारों का ही चमत्कार है कि कुन्दकुन्दार्यदेव ११ वर्ष की खाने-खेलने की अवस्था में ही नग्न दिगम्बर साधु बनकर जंगल में मंगल स्वरूप के आश्रय से प्रचुर आत्मिक आनंद भोगते थे। अल्प भी अक्षर विद्या याद न रख पाने वाले शिवभूति मुनिराज अनंतज्ञान के धनी अरहन्त-सिद्ध परमात्मा बन गए। घोर गृहीत मिथ्यात्व में डूबे राजा श्रेणिक भी क्षायिक सम्यग्दृष्टि जैन श्रावक बन गए। भगवान महावीर स्वामी का जीव क्रूर परिणामी हिंसक शेर की पर्याय में ही शांत परिणामों से युक्त सम्यग्दृष्टि धर्मात्मा हो गया। जब सीताजी को गर्भवती दशा में छल पूर्वक निर्जन वन में छोड़ा गया उस समय भी वह द्वेष रहित, निशंक और निर्भय रहीं। और भरत चक्रवर्ती छह खंड, ९६ हजार

शेष पृष्ठ १९ पर...

निज भाई निरगुन भलौ, पर गुनजुत किहि काम।
आँगन तरु निरफल जदपि, छाया राखै धाम।।

निसि में दीपक चन्द्रमा, दिन में दीपक सूर।
सर्व लोक दीपक धरम, कुल दीपक सुत सूर।।

सीख दई सरधै नहीं, करे रैन दिन सोर।
पूत नहीं वह भूत है, महा पाप फल घोर।।

सुसक एक तरु सघन वन, जरतहिं देत जराय।
त्यों ही पुत्र पवित्र कुल, कुबुद्धि कलंक लगाय।।

तिसना तुहि प्रनपति करूँ, गौरव देत निवार।
प्रभु आय बावन भये, जाचक बलि के द्वार।।

भावार्थ- १. सगा भाई गुणहीन होने पर भी अच्छा है, जबकि पराया गुणयुक्त होने पर भी किसी काम का नहीं। जिस प्रकार यदि आंगन में फल हीन वृक्ष हो तथापि उसकी छाया तो मिलती ही है।

२. रात्रि का दीपक चन्द्रमा है, दिन का दीपक सूर्य है, सारे संसार का दीपक धर्म है और कुल का दीपक शूरवीर पुत्र है।

३. शिक्षा देने पर भी जो श्रद्धा नहीं करता। रात-दिन झगड़ा करता रहता है, ऐसा पूत, पूत नहीं भूत है। वह तो अपने घनघोर पापों का फल है।

४. कितना ही सघन वन क्यों न हो, एक ही जलता हुआ सूखा वृक्ष सारे वन को जला देता है, उसी प्रकार एक ही कुबुद्धि पुत्र सारे कुल को कलंकित कर देता है।

५. हे तृष्णे ! मैं तुझे नमस्कार करता हूँ, क्योंकि तू मनुष्य के गौरव को नष्ट कर देती है। विष्णु भगवान ने तृष्णा के वश बलि के द्वार पर आकर याचना की तो बौने हो गए।

– बुधजन सतसई-कविवर बुधजन

सही निर्णय

एक राजा के चार रानियाँ थीं, चारों रानियों के एक-एक पुत्र था। जब चारों राजकुमार बड़े हुए तब राजा को चिन्ता हुई कि किसका राज्याभिषेक किया जाये, सभी राजकुमार शारीरिक योग्यता एवं उम्र में लगभग समान थे। यद्यपि सभी राजकुमार आज्ञाकारी थे किन्तु फिर भी भविष्य में रानियों एवं राजकुमारों में राजगद्दी के विषय को लेकर परस्पर कोई कलह न हो जाये, यह सोच-सोच कर राजा बहुत चिन्तित रहता था। इसी चिन्ता से परेशान राजा ने चारों राजकुमारों को बुलाया एवं अपने साथ लेकर साधु महात्मा के पास पहुँचा, चारों रानियाँ भी साथ थीं। राजा ने साधु महात्मा को अपनी चिन्ता का कारण बताकर उसका समाधान चाहा।

राजा की चिन्ताजनक बात को सुनकर साधु ने राजा बनने योग्य राजकुमार का निर्णय करने के लिए, उन चारों राजकुमारों में से प्रत्येक से एक ही सवाल किया – 'अगर तुम्हें पता चले कि अपने राज्य में कोई अपराधी रहता है तो तुम क्या करोगे?'

पहले राजकुमार ने उत्तर दिया– 'मैं देखूँगा कि मेरे पास दूसरा काम तो नहीं है? नहीं होगा तो फिर उस अपराधी के बारे में सोचूँगा।'

दूसरे राजकुमार ने कहा कि – 'उसे तुरन्त दण्ड दूँगा।'

तीसरे राजकुमार ने जबाब में कहा कि – 'मैं पूरी जाँच करूँगा और यदि वह दोषी पाया गया तो उसे दण्ड सुनाकर जेल भेज दूँगा।'

अन्तिम व चौथे राजकुमार ने साधु महाराज के प्रश्न के जबाब में कहा कि– 'मैं पहले यह देखूँगा कि यह दोष कहीं मुझमें तो नहीं ? अगर है तो पहले मैं अपने दोषों को त्यागूँगा, फिर उससे कहूँगा कि वह सुधरे, फिर भी वह नहीं सुधरा तो दण्ड दूँगा।'

बस फिर क्या था ! राजा की चिन्ता दूर हो गई, राजा ने चौथे राजकुमार को राजा बना दिया गया।

इसीप्रकार हम भी सुखी होने के नाम पर कभी व्यवहार शुभ क्रियारूप धर्म पुरुषार्थ करते हैं, कभी पैसा कमाने रूप अर्थ पुरुषार्थ करते हैं, कभी भोग भोगने रूप काम पुरुषार्थ करते हैं; परन्तु इन सबको करके भी उन तीन राजकुमारों की भाँति सुखरूपी राज्य प्राप्त नहीं कर पाते। मात्र मोक्ष पुरुषार्थ करनेवाले ज्ञानी जीव ही उस चोथे राजकुमार की भाँति मोक्ष सुख, निराकुल सुख, सिद्धों का सुख साम्राज्य – राज्य प्राप्त करते हैं। हमें भी ऐसा ही राज्य प्राप्त करना है।

– महावीर बखेड़ी शास्त्री

अर्जन, विसर्जन एक भूल

एक व्यक्ति किसी समय यात्रा के लिए निकला। उसे यात्रा में पहाड़ के ऊपर चढ़ना था अतः इस यात्रा के लिए उसने उपयुक्त जूते खरीदे और जूते पहिनकर उसने चलना आरम्भ किया। पहाड़ पर अभी वह कुछ ही दूर चढ़ पाया था कि राह में उसे एक सुन्दर थैला पड़ा दिखाई दिया। चलते-चलते उसके पैर रुक गए। वह आगे न बढ़ सका। उसके मन में उस थैले को उठा लेने के भाव हुए।

जहाँ वह थैला पड़ा था, उस ओर गया। उसने वहाँ जाकर थैला उठाया। थैला भारी था, पर देखने में सुन्दर था। उसने उस थैले को इस तरह अपने कंधे पर उठाया, मानो वह स्वर्ण मुद्राओं से भरा हुआ हो। अभी पहाड़ पर चढ़ने का उत्साह था, इस उत्साह के कारण थैले में क्या है? यह देखने की इच्छा भी नहीं हुई। यह जानने का तो मानो उसके पास समय ही नहीं था।

वह पहाड़ पर आगे-आगे चढ़ रहा था, गर्मी भी बढ़ रही थी, वजन अधिक लगने लगा। उसके पास एक थैली में रास्ते के लिए नास्ता था। उसने उस थैली को वहीं छोड़ दिया। कुछ वजन कम हुआ। पहाड़ पर सुन्दर व वजनदार थैला कंधे पर लिए उत्साह से आगे बढ़ रहा था, पर फिर थकान लगी तो उसने अपने नए जूते वजन कम करने के लिए खोल दिए। नंगे पैर ही वह पहाड़ पर चढ़ने लगा। आगे चढ़ते-चढ़ते जब वह थक गया, भूख भी लगने लगी, अभी मंजिल थोड़ी और दूर थी। थकान मिटाने वह एक पेड़ की छाया में वहीं एक चट्टान पर बैठ गया। थोड़ा विश्राम करके भूख के कारण वह जल्दी चलने को तैयार हो ही रहा था तभी उसे उस सुन्दर थैले में क्या है – यह जानने का विचार आया।

जब उसने थैला खोला तब देखा कि अरे ! ये क्या ? थैले में तो एक अनुपयोगी पत्थर मात्र रखा है। यह देखकर उसकी भूख अचानक बढ़ गई और अपनी मूर्खता पर पछतावा होने लगा कि अरे! मैंने निस्सार वस्तु को तो कंधे पर ढ़ोया और सारभूत वस्तु को रास्ते में ही फैंक दिया। पर अब पछताने से क्या होता है।

इसी प्रकार हम भी जीवन भर निस्सार पदार्थों का तो परिग्रह करते हैं और सारभूत धर्म को समझने का उद्यम

शेष पृष्ठ ९ पर...

आओ जाने करणानुयोग

प्रश्न- राग किसे कहते हैं?

उत्तर- किसी पदार्थ को इष्ट जानकर उसमें जीव के प्रीतिरूप परिणाम का होना, वह राग है।

माया, लोभ, हास्य, रति, तीन वेदरूप परिणाम और पर-पदार्थों के प्रति आकर्षण स्नेह, प्रेम, ममत्वबुद्धि, भोक्तृत्वबुद्धि, आसक्ति इत्यादि चारित्र मोहनीय कर्मोदय के समय में अर्थात् निमित्त से होनेवाले जीव के चारित्र गुण के कषायरूप परिणमन अर्थात् परिणामों को राग कहते हैं।

प्रश्न- द्वेष किसे कहते हैं?

उत्तर- किसी पदार्थ को अनिष्ट जानकर उसमें जीव के अप्रीतिरूप परिणाम का होना, वह द्वेष है।

क्रोध, मान, अरति, शोक, भय, जुगुप्सा और पर-पदार्थों के प्रति घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, जलन, द्रोह, असूया इत्यादि चारित्रमोहनीय कर्मोदय के समय में अर्थात् निमित्त से होने वाले जीव के चारित्रगुण के कषायरूप परिणमन अर्थात् परिणामों को द्वेष कहते हैं।

–गुणस्थान विवेचन से साभार

पाठक जगत-

माह नवम्बर २०१२ का ध्रुवधाम (श्री सम्मेदशिखर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव विशेषांक) मिला। स्थायी स्तंभों के अलावा एक विशेषांक के अनुरूप जो सामग्री इस अंक में उपलब्ध है वह श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट द्वारा सम्मेदशिखर में स्थापित श्री कुन्दकुन्द कहाननगर एवं माह के अन्तिम सप्ताह में आयोजित पंचकल्याणक की सर्वांगीण विषय वस्तु प्रस्तुत करता है।

इसमें इससे जुड़े हुए प्रमुख महानुभावों से दूरभाष पर की गई बातचीत इस विशाल आयोजन के भव्य स्वरूप को प्रस्तुत करने में सफल रही है। पूज्य गुरुदेवश्री, बाबू युगलजी एवं डॉक्टर साहब की अभिव्यक्तियां प्रासंगिक विषय को महत्त्वपूर्ण बना रही हैं। प्रतिष्ठा महोत्सव के कुशल निर्देशक श्री रजनीभाई द्वारा कथित वाक्य कि 'विश्व के अद्वितीय तीर्थराज पर विश्व के मुमुक्षु समाज द्वारा निर्मित कुन्दकुन्द कहाननगर गुरुदेवश्री की यशोगाथा का कीर्तिस्तंभ है' अक्षरशः सत्य है।

ट्रस्ट द्वारा संचालित टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जिसमें आ. डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के निर्देशन

शेष पृष्ठ २७ पर...

त्रिभुवन तिलक, हे जिनवरम् !

प्रभु राग-द्वेष/विकार-तज, नरवर दिगम्बर वन गए।
निज साधना/आराधना कर वीतरागी बन गए॥
चिद्रूप में तद्रूप होकर, परम योगी बन गए।
ध्रुव ध्येय का चिर ध्यान धर, ध्याता-विधाता बन गए॥१॥

तुम जन्म से त्रय ज्ञान धारी, स्वात्म में तन्मय हुए।
शुद्धात्मा के ध्यान से, चऊ-कर्म घाती क्षय हुए॥
अन्तर्मुखी पुरुषार्थ कर प्रभु ! अमित-गुणधारी हुए।
शाश्वत सहज सुख प्राप्त कर, चैतन्य लक्ष्मीपति हुए॥२॥

प्रभु ! आपको भविजन निहारें, आप अन्तर्मुख रहें।
धन-धन्य है प्रभुता अहो ! जो स्वयं में तन्मय रहें॥
यह पदम-आसन, सौम्य छवि, चैतन्य-निधि दर्शावती।
है मौन फिर भी शान्त मुद्रा, परम पद प्रकटावती॥३॥

योगी/मुनीश्वर, सकल-साधक, आपको ध्याते प्रभो !
सुरनाथ, नरपति, नागपति, गुणगान-नित गाते विभो॥
तुम ध्यान-ध्याते ही 'सहज' मिटते सकल जग ताप हैं।
मोहान्धकार, विनाशने को 'प्रखर-दिनकर-आप हैं'॥४॥

नाशाग्र दृष्टि/सौम्य मुद्रा, वीतरागी आपकी।
मंगलमयी/मंगलकरण,'जिन' शान्ति मूरत आपकी॥
धन-धन्य, मेरे दृग हुए, धनि घड़ी है शुभ आपकी।
मोहादि, भ्रम-तम, क्षय हुआ, जब लखी मुद्रा आपकी॥५॥

– सन्तोष जैन 'सहज' गुरसरांय झाँसी (उ.प्र.)

सदाचार संदेश

भैया मानो हमारी इक बात-
दिन में भोजन, दिन में फेरे, दिन में चढ़े बरात।

अष्टाह्निका-सुमंगलकार

आया मंगलपर्व महाशुभ, अष्टाह्निका सुमंगलकार।
हाथों में पूजन की थाली, उर में हो जिनभक्ति अपार॥
श्री जिनवर के पद पंकज की, शरण गहें भविजन सुखकार।
निज आतम की अद्भुत महिमा, लखकर होवें भव से पार॥
मध्यलोक में द्वीप आठवाँ, बावन जिनमंदिर अभिराम।
भाव सहित सुर पूजन करते, विषयदाह से ले विश्राम॥
एक-एक जिनमंदिर में हैं, एक शतक वसु श्री जिनराज।
जिनकी अन्तर्मुखमुद्रा से मुखरित होते चेतनराज॥

– पं. अभयकुमार शास्त्री, देवलाली

पृष्ठ १३ का शेष.....

रानियों के भोग वैभव के बीच में रहते हुए भी निर्भोग ज्ञानस्वरूप का भोग करते हुए साधु दीक्षा लेकर ४८ मिनिट के अंदर ही अरहंत परमात्मा बन गये।

प्रथमानुयोग में वर्णित इन प्रसिद्ध पुराण पुरुषों के जीवन दर्शन का अवलोकन कर हमारा ज्ञान सजग होता है, श्रद्धा में अपूर्व विश्वास जागृत होता है और पौरुष उछलने लगता है कि चाहे बाल अवस्था हो, स्मरण शक्ति क्षीण हो, पूर्व में गृहीत मिथ्यात्व दशा हो, तिर्यंचगति में कषायों की तीव्रता हो, संयोगों की प्रतिकूलता हो या अनुकूलता हो हम भी 'अध्यात्म के संस्कारों' से संस्कारित होकर अनादिकाल से चली आ रही अनंत दुःखों की श्रृंखला का अभावकर अनंतकाल के लिए अनंत सुखमयी शाश्वत् सिद्धदशा सहज ही प्राप्त कर सकते हैं।

– ब्र. अमित मोदी, विदिशा

पृष्ठ ५ का शेष.....

अत्यधिक क्षयोपशम हो, ग्यारह अंग के पाठी हों; किन्तु अज्ञानी हों – ऐसे जीवों को कुछ भी तत्त्व प्राप्त नहीं होता। 'हम बहुत जानते हैं, हमें माननेवाले बहुत हैं' – ऐसे अभिमानी जीवों से भी ज्ञान प्राप्त नहीं होता है। हे प्रभु! आपके केवलज्ञान में से जो वाणी प्रवाहित होती है, उसे श्रवणकर दुनिया निहाल हो जाती है। यद्यपि भगवान किसी को कुछ नहीं देते हैं, तथापि उनकी वाणी द्वारा अद्भुत महिमामयी आत्मस्वरूप प्रतिपादित होता है, उसे श्रवणकर जगत के भव्यजीव अनादि से विस्मृत निज चैतन्य-निधान की पहिचान कर निहाल हो जाते हैं, सुखी हो जाते हैं।

देखो! कुछ न देकर भी भगवान ने सर्वस्व दिया। ●

बाल-युवा जगत-

ध्रुवधाम-द्वादशी

ध्रुवार्थी रहते हैं जहाँ,
वहाँ तुम करो निवास।
आ जाओ ध्रुवधाम में,
छोड़ के सब गृहवास ॥१॥
नित प्रति स्वाध्याय,
चिंतवन चलता है दिन रात।
विकथायें होती नहीं,
करते तत्त्व की बात ॥२॥
ममता-राजकुमारजी
करवाते आध्यात्मिक पाठ।
पढ़ते-पढ़ाते हो गये,
सत्र यहाँ पर आठ ॥३॥
जिनमंदिर जिन समवशरण,
जिनप्रतिमा प्रख्यात।
प्रवचन करने आते हैं,
विद्वत्गण विख्यात ॥४॥
ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट से
चलते हैं सब काम।
जिनके अथक् परिश्रम से,
बना है ये ध्रुवधाम ॥५॥
साधर्मीजन हेतु जो,
निर्मित है निजधाम।
मोक्षमार्ग का मूल है,
आ जाओ ध्रुवधाम ॥६॥
तीन लोक में ध्येय जो,
एक मात्र श्रद्धेय।
अपना निज ध्रुवधाम है,
बाकी सब हैं हेय ॥७॥
५ साल में यहाँ पर होता
पैंतालिस ग्रन्थों का अभ्यास।
और साथ करते हैं सब
शास्त्री की भी डिग्री पास ॥८॥
मार्ग पर चलना है हमें,
परमपूज्य निर्ग्रन्थ।
गुरुवर कहते हैं हमें,
चलो स्वानुभव पंथ ॥९॥
पुस्तकालय ब्राह्मी-सुन्दरी,
अकलंक शिक्षण संस्थान।
कुन्दकुन्द स्वाध्याय भवन है,
बालयति पंच भगवान ॥१०॥
मानस्तंभ उत्तुंग जो,
इकहत्तर फिट है जान।
ऊपर नीचे हैं विराजते,
श्री वीर भगवान ॥११॥
ध्रुवधाम में चलता है अहो,
विस्तृत छात्रावास।
'सिद्धार्थी' सिद्धत्व पा,
पूरी करते आस ॥१२॥

– संजय जैन 'सिद्धार्थी'

पृष्ठ २१ का शेष.....

जैनों द्वारा जैन पर्व पर इस तरह का अविवेक जैनत्व पर ही कलंक है। हमें इस पर गंभीरता से सोचना चाहिए व अहिंसा के अवतार का निर्वाणदिवस अहिंसापूर्वक ही मनाना चाहिए।

– अमित जैन 'अरिहंत' ध्रुवधाम

दीपावली
क्या? क्यों? कैसे?

दीपावली पर्व क्या है?

१. अंधकार में प्रकाश का पर्व है। २. अज्ञान के नाश और शीतल ज्ञान के प्रकाश का पर्व है। ३.सत्यता की ओर ले जाने का पर्व है। ४. भगवान महावीर के निर्वाणोत्सव का पर्व है। ५. भगवान महावीर के अहिंसा, सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, अनेकान्त-स्याद्वाद, वस्तु स्वातंत्र्य के सिद्धान्तों को समझकर स्वयं महावीर बनने का पर्व है। ६. दीपावली घी-तेल के दीपक जलाने का नहीं अपितु ज्ञान दीप प्रज्वलित करने का पर्व है।

भगवान महावीर कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि के अवसान व अमावस्या के प्रातःकाल स्वाति नक्षत्र में जब धरती पर सूर्य की प्रथम किरण खेलना चाहती है उसी समय पावापुर के सुरम्य पद्म सरोवर के तट पर शरीर छोड़कर मुक्ति की ओर गमन कर गए थे। इसी स्मृति को बनाये रखने के लिए निर्वाण फल समर्पित करते हुए निर्वाण उत्सव / दीपावली मनाते हैं।

हरिवंशपुराण के अनुसार चतुर्थ काल के तीन वर्ष साड़े आठ माह बाकी रह जाने पर कार्तिक कृष्ण अमावस्या के प्रातःकाल योग निरोध करके, कर्मों का नाश करके, भगवान महावीरस्वामी मुक्ति को प्राप्त हुए; इस अवसर पर चार निकाय के देवों ने आकर उनकी (मोक्षकल्याण की) पूजा-अर्चना की इस कारण से यह निर्वाण वर्ष (दीपावली पर्व) मनाते हैं।

इसी दिन सांयकाल गौतम गणधर को केवलज्ञान की प्राप्ति हुई, अतएव दीपावली के अवसर पर समवशरण का चित्र बनाकर ज्ञान लक्ष्मी की पूजन करने की प्रवृत्ति भी प्रारंभ हुई; कालांतर में लोगों ने अज्ञानतावश धनलक्ष्मी की पूजन करना प्रारंभ कर दिया।

अहिंसा के प्रबल प्रचारक भगवान महावीरस्वामी के निर्वाण दिवस के अवसर पर पटाखे फोड़कर, दीपक जला कर हम भगवान महावीर/राम व बुद्ध से जुड़े हुए इस पर्व को मनाने में अनंत जीवों की हिंसा व करोड़ों रुपयों का दुरुपयोग करते हैं। यह एक विचारणीय तथ्य है। एक ओर अहिंसा-मैत्री-समभाव-करुणा आदि सिद्धान्तों को संयुक्त राष्ट्रसंघ जैसी विश्वव्यापी संस्थायें आवश्यक मान रहीं हैं, वहीं हम उनके भक्त उन्हीं के सिद्धान्तों को अपनाने में संकोच कर रहे हैं। शेष पृष्ठ २० पर.

शर्म से मस्तक झुक जाता है

१. जब हमारे सिद्धक्षेत्र, अतिशय क्षेत्र, तथा कल्याणक क्षेत्र जो कि हमारा सच्चा स्वरूप दिखाने वाले व सुख का मार्ग बताने वाले हैं वे मात्र पर्यटन क्षेत्र बनकर रह जाते हैं।

२. जब पवित्र क्षेत्रों पर जाकर हमारे ही साथी, जमीकंद व रात्रिभोजन की व्यवस्था की मांग करते हैं।

३. जब पर्वों के अवसर पर जिनमंदिरों या तीर्थों पर पैसा एकत्र करने के लिए श्रृंगार/हास्य रस से भरपूर कार्यक्रमों का आयोजन करवाकर वाहवाही लूटते हैं।

४. जब विवाहादि कार्यक्रमों में रात्रिभोजन कराने के लिए जोर दिया जाता है।

५. जब जिनमंदिर को सम्हालने वाले ट्रस्टी धन/पद के लोभ में कोर्ट-कचहरी जाकर चुनाव जीतने का प्रयास करते हैं।

६. जब लोग अपना पैसा दिखाने के लिए बड़े-बड़े जिनमंदिरों को निर्माण तो कर देते हैं, लेकिन उन्हें सम्हालने की समुचित व्यवस्था नहीं करते।

७. जब अपने ही साधर्मीभाई/जैन साहब बसस्टेण्ड या रेल्वे स्टेशन पर बिना छना पानी पीते व अभक्ष्य भक्षण करते हुए देखे जाते हैं।

८. जब साधर्मी/विद्वान् परस्पर शास्त्र चर्चा नहीं, अपितु राग-रंग की चर्चा करते हैं।

९. जब मंदिरों में स्थापित पुस्तकालय में विराजमान शास्त्रों पर धूल चढ़ जाती है, उन्हें कोई पढ़ने/सम्हालने वाले नहीं मिलते। – **अखिलेश ध्रुवधाम**

अकलंक ज्ञानवर्धनी २६ के सही उत्तर-

१. तीर्थराज सम्मेदशिखर व अयोध्या। २. अनंत। ३. धवलकूट से ४. श्री शांतिनाथ, कुंथुनाथ, अरनाथ। ५. सम्मेदशिखरजी में ६. राजगृही ७. सम्मेदशिखर ८. ललितकूट ९. इस भूमि से हर काल में नियम से २४ तीर्थंकर व असंख्यात मुनिवर मोक्ष पधारते हैं १०. गुणावा ११. वासुपूज्य भगवान के चंपापुर में १२. प्रथम तीर्थंकर ऋषभदेव अष्टापद कैलाश से, वासुपूज्य चंपापुर से, नेमिनाथ गिरनार से, महावीर पावापुर से व अन्य शेष २० तीर्थंकर सम्मेदशिखर से मोक्ष पधारे हैं। १३. विपुलाचल से, १४. राजगृही से जीवन्धरकुमार, विद्युच्चर, धनरथ, सुमंदर, मेघरथ आदि। १५.पारसनाथ, महावीरजी।

श्री आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव
भीलवाड़ा के प्रसंग पर

अकलंक ज्ञानवर्धनी-२९

ना	म	रु	दे	वी	फा	ल्गु	न	म	नी
वृ	भि	अ	ग	म	मा	घ	१३	श्रा	लां
ष	सु	रा	१४	त्रि	श्रे	१५	वा	व	ज
भ	न्द	व	य	श	यां	श्री	मा	ण	ना
से	री	ण	कै	ला	श	प	र्व	त	की
न	अ	क्ष	य	तृ	ती	या	स	ह	मृ
ली	रा	ज	कु	मा	र	ध्या	र्वा	स्ति	त्यु
ब	चै	त्र	कृ	ष्ण	९	यो	र्थ	ना	का
हु	वि	र्य	वी	त	नं	अ	सि	पु	र्ति
बा	मा	घ	कृ	ष्ण	१४	प	द्धि	र	क

उक्त वर्ग में से ऊपर-नीचे, आड़े-तिरछे शब्दों को जोड़कर निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दीजिये –

१. श्री ऋषभकुमार के माता-पिता का नाम २. जन्म तिथि ३. निर्वाण तिथि ४. निर्वाण स्थली ५. दीक्षा निमित्त ६. प्रथम मोक्ष जाने वाले का नाम ७. प्रथम गणधर ८. परिवार में कामदेव ९. उनकी पुत्री का नाम १०. जन्म स्थली ११. आहारदान की तिथि १२. प्रथम आहारदाता का नाम १३. आहारदान कब हुआ १४. आहारदान कहाँ हुआ १५. कहाँ से चयकर जन्म लिया ?

सही उत्तर लिखकर 'ध्रुवधाम' पो. कूपड़ा, जिला बांसवाड़ा के पते पर दिनांक १५ जनवरी २०१३ तक भेजें।

सही ५ विजेताओं को पं. कैलाशचन्द्र शास्त्री मोमासर की ओर से १००-१०० रुपये का पुरुस्कार दिया जायेगा। **प्रस्तुति- समर्पण**

सहयोग जगत-

आप सबको विदित ही है कि आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के पुण्य प्रभावना योग में श्री ज्ञायक पारमार्थिक ट्रस्ट द्वारा रत्नत्रय तीर्थ 'ध्रुवधाम' बांसवाड़ा की स्थापना २००४ में की गई। जिसमें भव्य पंचबालयति जिनमंदिर, मानस्तंभ, स्वाध्याय भवन व आत्मार्थियों के निवास हेतु निजधाम का निर्माण किया गया है।

'ध्रुवधाम' में संचालित महत्त्वपूर्ण गतिविधि आचार्य अकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय है जिसमें वर्तमान में ४४ छात्र अध्ययनरत हैं व अभी तक ३२ छात्र शास्त्री करके यहाँ से निकल चुके हैं। इसके साथ ही आपकी प्रिय मासिक पत्रिका 'ध्रुवधाम' का भी नियमित प्रकाशन किया जाता है।

'ध्रुवधाम' की व्यवस्थाओं को व्यवस्थित व नियमित संचालन करने हेतु एक दिन के सम्पूर्ण व्यय के सहयोग हेतु ३१००/- सहयोग राशि निर्धारित की गई है। जो इस योजना में सहयोग प्रदान करेंगे, उनका नाम अगले वर्ष 'ध्रुवधाम' से प्रकाशित कलेण्डर में उनकी इच्छित तिथि के सम्मुख अंकित किया जायेगा।

अभी तक हमें जिनकी स्वीकृतियां प्राप्त हुई हैं; उनके नाम क्रमशः प्रकाशित किए जा रहे हैं। आप भी अपनी भावनानुसार अपना सहयोग प्रदान कर सकते हैं।

नाम	सहयोग दाता	निवासी	तिथि संख्या
१.	श्री माणकलाल शंकरलालजी ठाकुर्डिया	उदयपुर	३
२.	स्व. कान्ताबेन मथुरालाल जैन	कुशलगढ़	१
३.	स्व. मथुरालाल जीतमल जैन	कुशलगढ	१
४.	स्व. चन्दाबेन हंसमुखलाल शाह	कुशलगढ	१
५.	श्री विश्वासकुमार रमणलाल जैन	कुशलगढ	१
६.	श्री जयन्तीलाल चान्दमल शाह	कुशलगढ	१
७.	श्री अजबलाल भगवानलाल लखावत	कुशलगढ	१
८.	श्री अछरतलाल मोतीलाल जैन	कुशलगढ	१
९.	श्री महावीर प्रसाद ठाकुर्डिया	उदयपुर	१
१०.	श्री इन्दरमल जैन	उदयपुर	१
११.	श्री सुरेन्द्रकुमार टिमरवा	उदयपुर	१

१२. श्री मोतीलाल भादावत	उदयपुर	१
१३. श्री नेमिचन्द जैन कोटावाल	उदयपुर	१
१४. श्रीमती जशोदादेवी दीपचन्द गांधी	उदयपुर	१
१५. श्री भागचन्द कालिका	उदयपुर	१
१६. श्री निर्मलजी सिंघवी नेमिनाथ कॉलोनी	उदयपुर	१

आप भी अपने परिवार के सदस्यों के जन्मदिन/शादी की सालगिरह/पुण्यतिथि के अवसर पर ३१००/रुपये प्रदानकर ज्ञान प्रचार में सहभागी बन सकते हैं। आप अपनी सहयोग राशि बैंक ऑफ बड़ोदा, ठीकरिया-बांसवाड़ा के श्री ज्ञायक चेरीटेबल ट्रस्ट के खाता संख्या १४८८०१००००१०७७ में जमा करा कर सूचित कर सकते हैं। ये सभी नाम २०१३ में प्रकाश्य कलेंडर में प्रकाशित किए जायेंगे।

- सम्पर्क सूत्र- धनपाल ज्ञायक 09414101432/विनोद जैन 09460092210

कहानी लेखन प्रतियोगिता...

प्रत्येक घर में दादी-नानी के द्वारा अपने नन्हें-नन्हें बालकों को कहानियाँ सुनाई जाती हैं। किन्हीं घरों में दादी-नानी के पास धार्मिक शिक्षाप्रद कहानियों की कमी होती है, अतः वे या तो फिल्मी कहानियाँ बच्चों को सुनाते हैं या उन बच्चों से बचना चाहते हैं।

आओ ! हम दादी-नानी से सुनी हुई या दादी-नानी को सुनाने के लिए कहानियाँ सबको उपलब्ध करायें। तो उठाइये कलम और लिख डालिए दादी-नानी की कहानी।

१. कहानी पौराणिक या काल्पनिक हो परन्तु वह जैन दर्शन के सिद्धान्तों/नैतिकता/सदाचारण की शिक्षा देने वाली हो।

२. कहानी बाल मनोविज्ञान पर आधारित अधिकतम ३०० शब्दों की हो।

३. प्रतियोगिता में प्रथम, द्वितीय, तृतीय स्थान प्राप्त कहानियों का क्रमशः १०००/ ७००/ व ५००/ रुपये का पुरुस्कार दिया जायेगा। साथ ही पुस्तक में प्रकाशन योग्य प्रत्येक कहानी को २००/ रुपये प्रोत्साहन राशि के रूप में प्रदान किये जायेंगे।

४. कहानी भेजने की अन्तिम तिथि ३१ दिसम्बर २०१२ है।

निवेदक व कहानी भेजने का पता – समर्पण –

Mob. - 09414103492 / 08003639039, email-dhruvraj1008@rediffmail.com

अमित जैन, कोलकता 09831665857, पीयूष शास्त्री, जयपुर 09785643202

ध्रुवधाम, पो. कूपड़ा, जिला-बांसवाड़ा राज. 327001

सांस्कृतिक एवं क्रीड़ा प्रतियोगिता २०१२ सम्पन्न

आचार्य अकलंकदेव जैन न्याय महाविद्यालय की क्रीड़ा एवं सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ दिनांक २१ से २४ अक्टूबर २०१२ तक सम्पन्न हुईं। प्रतियोगिताओं का उद्घाटन इन्दौर से पधारे श्री प्रदीप पाटनी, श्री पदम पाटनी, डॉ. ममता जैन प्राचार्या व पं. कमलेश जैन शास्त्री की उपस्थिति में हुआ।

सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के अंतर्गत् भजन प्रतियोगिता श्री प्रदीप पाटनी की अध्यक्षता तथा श्रीमती मंजू पाटनी के निर्णायकत्व में आयेजित की गई। कार्यक्रम का मंगलाचरण कु. नित्या जैन कोटा ने तथा संचालन करण दिगम्बरे ने किया जिसमें आचार्य समंतभद्र दल विजेता व आचार्य कुन्दकुन्द दल उप-विजेता रहे। द्वितीय दिवस अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता श्री सुमतिलाल लुणदिया द्वारा संचालित की गई, जिसमें आचार्य नेमिचन्द्र दल विजेता तथा आचार्य कुन्दकुन्द दल उप-विजेता रहे।

कैरम (सिंगल) प्रतियोगिता में बाहुबली चौगुले विजेता तथा प्रशान्त जैन उपविजेता, कैरम डबल में अक्षय सागवाड़ा व करण जैन विजेता तथा अक्षय चव्हाण व शुभम् जैन उप-विजेता रहे। बैडमिंटन में अनुराग जैन विजेता तथा अक्षय चव्हाण उपविजेता रहे। चैस (शतरंज) में अनुराग जैन प्रथम व प्रदीप धोतरे द्वितीय रहे। क्रिकेट में ध्रुवधाम इंडियन्स टीम विजयी रही। अनुराग जैन को मैन ऑफ द मैच तथा मैन ऑफ द सीरिज घोषित किया गया। वॉलीबाल में ध्रुवधाम दल विजयी रहा। कबड्डी में आचार्य कुन्दकुन्द दल प्रथम व आचार्य नेमिचन्द्र दल द्वितीय रहा। १०० व २०० मीटर दौड़ में अनुराग जैन प्रथम, रत्नेश जैन द्वितीय तथा अक्षय चव्हाण तृतीय रहे। चित्रकला प्रतियोगिता में अक्षय चव्हाण प्रथम व नीलेश उदयपुर द्वितीय; शास्त्र सज्जा प्रतियोगिता में योगेश जैन प्रथम व संदीप जैन द्वितीय रहे। मैन ऑफ द टूर्नामेन्ट अनुराग जैन को चुना गया।

दिनांक ४ नवम्बर २०१२ को प्रतियोगिताओं का पुरस्कार वितरण समारोह श्री सुशील जैन की अध्यक्षता, श्री महेश जैन के मुख्यातिथ्य व श्री सुमतिलाल लुणदिया, डॉ. ममता जैन, पं. रितेशकुमार शास्त्री, पं. कमलेशकुमार शास्त्री, पं. संदीपकुमार शास्त्री एवं पं. अभिषेककुमार शास्त्री के विशिष्टातिथ्य में सम्पन्न हुआ। सर्वप्रथम डॉ. ममता जैन द्वारा प्रतियोगिताओं में छात्रों द्वारा उत्साहपूर्वक ली गई सहभागिता को रोचक ढंग से प्रस्तुत करते हुए अतिथियों का शब्दसुमनों से स्वागत किया। अतिथियों

द्वारा छात्रों को शुभकामनायें व आवश्यक निर्देशों के साथ-साथ मैडल व साहित्य भेंट कर सम्मानित किया।

आचार्य कुन्दकुन्द दल को प्रतियोगिता का सफलतम दल घोषित किया गया। पुरस्कार वितरण समारोह का संचालन दीपक जैन ने किया। प्रतियोगिताओं का संयोजन करण दिगम्बरे व दीपक जैन ने किया।

-अभिषेक शास्त्री

पृष्ठ १७ का शेष.....

में अनवरत विद्वान् तैयार हो रहे हैं और गुरुदेवश्री द्वारा प्रतिपादित तत्त्वज्ञान को जन-जन तक पहुँचा रहे हैं और द्वितीय अलौकिक कार्य के रूप में शाश्वत तीर्थधाम में निर्मित संकुल संबंधी सामग्री सुन्दर ढ़ग से प्रस्तुत की गई है इस सामग्री के संकलन में संपादक द्वारा किये गये परिश्रम हेतु हार्दिक बधाई।

महोत्सव ऐतिहासिकता के साथ सम्पन्न हो ऐसी मेरी हार्दिक भावना है।

पं. अजितकुमार शास्त्री, अलवर

विचार जगत

'क्या सकल जैन/मुमुक्षु समाज का एक ही ध्वज गीत होना चाहिए? यदि हाँ तो कौन सा?'

देश में अनेक स्थानों पर पंच कल्याणक/विधान आदि कार्यक्रम होते हैं और उन अवसरों पर प्रतिष्ठाचार्यों द्वारा अपनी-अपनी पसंद के भिन्न-भिन्न गीत गाये जाते हैं, जो कि उचित प्रतीत नहीं होता है।

सम्पूर्ण देश का एक ही राष्ट्रगान ध्वजगीत के रूप में गाया जाता है। इसी तरह से अपनी समाज का भी एक ही ध्वजगीत हो तो एकता प्रतीत होती है।

इस संबंध में आप अपने विचार ३१ दिसम्बर २०१२ तक भेजें।

'ध्रुवधाम'
पो. कूपड़ा, जिला-बांसवाड़ा
राज. 327001 Mob. - 09414103492
email-
dhruvraj1008@rediffmail.com

साहित्य जगत -

क्षुल्लक श्री मनोहरलालजी वर्णी 'सहजानन्द' द्वारा प्रणीत "**सहजानद-गीता**" पृष्ठ-१६० पृष्ठीय (पाकेट) एक अनुपम कृति है, जिस पर वर्णीजी ने स्वयं लगभग ५०० पेज के प्रवचन भी किए हैं।

अध्यात्म से ओतप्रोत इस कृति का शुद्ध व सुन्दर संस्करण श्री महावीरप्रसाद जैन, रिटायर्ड कुलसचिव, राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर द्वारा प्रकाशित किया गया है। मूल्य-१०/-
प्राप्तिस्थान- लोकान्तिक, ए-31a अम्बेडकर मार्ग, बजाज नगर, जयपुर-**302015**

विविध जगत-

ज्ञान जागा - अज्ञान भागा

सूर्य का जब उदय होता है, तब अंधकार नष्ट हो जाता है। प्रकाश ही प्रकाश हो जाता है, नया अंधकार आने का नाम भी नहीं लेता। इसी प्रकार अज्ञान तिमिर को नष्ट करने का यही एक उपाय है कि ज्ञान की परिणति को अपने त्रिकाली ज्ञान स्वभाव में तन्मय कर दो, बस अज्ञान अंधकार भाग जायेगा- दूसरा कोई उपाय नहीं है।

अज्ञान के कारण ही जीव दुःखी हो रहा है अज्ञान का ऐसा भयंकर अंधेरा छाया है, जिसमें अपना-पराया कुछ भी नहीं सूझता है। जैसे शराबी को शराब के नशे में अपने-पराये की कुछ भी पहचान नहीं होती है। वह तो पागल की तरह नालियों में पड़कर खुश होता रहता है। राजा से हाथी खरीदने की बात करने लगता है।

तन-धन परिजन आदि को अपना मान करके उसके पालन-पोषण में चिन्तातुर हुआ अपना जीवन दुःखमय व्यतीत करता रहता है। भाग्य से कभी धनादि इकट्ठा हो जाये तो उसमें इतना मग्न हो जाता है कि उसे अपने भविष्य की कुछ भी खबर नहीं रहती। इस परिग्रहानंदी रौद्रध्यान का क्या फल होगा? इसका उसे विचार नहीं आता। जैनाचार्यों ने आत्मघाती को महापापी बताया है।

इस आत्मघात के महापाप से बचने के लिए सम्यग्ज्ञानरूपी अमृतपान ही इसका सर्वश्रेष्ठ उपाय है। वह सम्यग्ज्ञान ज्ञानस्वभाव की परिपूर्ण महिमा आने पर ही प्रकट होता है। महिमा इतनी आनी चाहिए कि उसके आगे भौतिक वैभव, ख्याति, लाभ, पूजा, प्रतिष्ठा और शास्त्रीय ज्ञानरूप इन्द्रियज्ञान काकबीट की तरह व्यर्थ व अनावश्यक दिखने लगे। ये भौतिक पदार्थ ज्ञान के ज्ञेय मात्र बनें, किन्तु इष्ट न बनने पावे। मात्र ज्ञानस्वभावी आत्मा ही उपादेय और ध्यान का ध्येय बना रहे।

यह बड़े आश्चर्य की बात है कि स्वयं ज्ञानपिण्ड होता हुआ भी उससे अपरिचित हो रहा है। जो अन्य सबका परिचय करा रहा है, बस वह उस ज्ञान के स्वभाव को नहीं जानता।

'आकुलित भयो अज्ञान धार,
ज्यों मृग मृग तृष्णा जान वारि।
तन परिणति में आपो चितार,
कबहू न अनुभवो स्वपद सार॥
(पं. दौलतरामजी)

कुछ बन्धु शास्त्र ज्ञान को ही ज्ञान

मानकर अपने को गौरवशाली अनुभव करते हैं, जबकि यह इन्द्रियज्ञान आत्म ज्ञान में निमित्त बन सकता है, किन्तु वह स्वयं आत्मज्ञान नहीं है। इसे प्रयोजनभूत ज्ञान मानकर तो शास्त्रज्ञान का अभिमान हुए बिना नहीं रह सकता। कुछ प्राणी कुछ उपाधियाँ प्राप्त कर अपने आपको महाज्ञानी मान बैठते हैं। जो सम्यग्ज्ञान प्राप्त करने में सबसे बड़ी बाधा है। जैसे भोजन की चर्चा को ही भोजन करना मान ले तो भूखा ही रहना पड़ेगा। यही हमारा हाल है। कुछ भाई उपाधि प्राप्त कर सन्तुष्ट हो जाते हैं फिर शास्त्र-स्वाध्याय का नाम भी नहीं लेना चाहते। इससे हमारा शास्त्रज्ञान भी अपरिपक्व ही बना रहता है। वह आत्मकल्याण का साधन बनकर रह जाता है। जिससे मात्र विद्याभिमान की पुष्टि होती रहती है, आतम शान्ति की रंचमात्र भी पुष्टि नहीं होती।

अतः हम द्रव्य श्रुतज्ञान को भाव श्रुतज्ञान रूप में परिणत करने का पुरुषार्थ करें। अपने ज्ञानस्वभाव को इन बाह्य उपाधियों से पृथक् अनुभव करने का प्रयत्न करें, तभी सच्चे सुख की प्राप्ति होगी। – **प्रकाशचन्द रतनलाल**

पहाड़िया, इचलकरंजी

समाचार जगत -

शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर – ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में २१ से ३० अक्टूबर तक १५वाँ आध्यामिक शिक्षण-शिविर अनेक उपलब्धियों के साथ सानंद सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर प्रतिदिन पूज्य गुरुदेवश्री के सीडी प्रवचन के साथ-साथ बाबू युगल के सीडी से और डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल के प्रातः एवं ब्र. सुमतप्रकाशजी के दोनों समय क्रमशः समयसार व षट् कारक पर साक्षात् प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। इनके अतिरिक्त ब्र.यशपालजी, पं. अभयकुमार देवलाली, पं. शान्ति कुमार पाटिल, पं. संजीव गोधा, डॉ. मनीश शास्त्री द्वारा कक्षायें चलाई गईं। पं. कमलजी पिड़ावा द्वारा प्रोढ़कक्षा चलाई गई। पं. वीरसागर, पं. राजकुमार आदि अन्य १६ विद्वानों के प्रवचनों का भी समय-समय पर लाभ मिलता रहा।

२६ अक्टूबर को ग्रामीण विकास राज्य मंत्री श्री प्रदीप जैन 'आदित्य' का अभिनन्दन किया गया, जिसमें उन्होंने डॉ. भारिल्ल की जन्मस्थली के काया कल्प करने की प्रेरणा देते हुए अपने मंत्रालय से सहयोग कराने का वचन दिया।

२०तीर्थंकर विधान एवं क्रमबद्ध पर्याय पर त्रिदिवसीय गोष्ठी व युवा फैडरेशन का अधिवेशन भी सम्पन्न हुआ।

शाश्वत तीर्थराज **सम्मेदशिखरजी** में पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव प्रारम्भ

सम्मेदशिखरजी- अनंतानंत सिद्ध भगवंतों की शाश्वत सिद्धभूमि, प्रत्येक जैन की आस्था स्थली, तीर्थराज सम्मेदशिखरजी में श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थ सुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा संस्थापित श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में निर्मित विशाल जिनालय में विराजमान होने वाले जिनबिम्बों की प्रतिष्ठा हेतु आयोजित श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के रूप में मुमुक्षु महा सम्मेलन का शुभारंभ दिनांक २४ नवम्बर २०१२ को देश के कोने-कोने से पधारे हजारों भाई-बहिनों की उपस्थिति में ब्र. जतीशचन्द शास्त्री के प्रतिष्ठाचार्यत्व में हुआ।

सर्वप्रथम श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में श्री पार्श्वनाथ पंचकल्याणक विधान, इन्द्र प्रतिष्ठा विधि सम्पन्न हुई। तत्पश्चात् जिनेन्द्र शोभायात्रा, भगवान के माता-पिता बने डॉ. माधुरी जैन-डॉ. शरद जैन भोपाल के निवास से मंगल कलश शोभा यात्रा, व इन्द्र प्रतिष्ठा शोभायात्रा गगनभेदी जयकारों के साथ प्रारम्भ हुई जो शाश्वत सिद्धभूमि के विविध मार्गों से होती हुई वाराणसी नगरी पहुँची।

ध्वजारोहण श्री रसिकभाई माणिकचन्द धारीवाल परिवार पूना द्वारा किया गया। इस अवसर पर कोलकता की अष्टदेवियों ने मनोहारी नृत्य प्रस्तुत किया। सिंहद्वार का उद्घाटन श्री जसवन्तलाल छोटालाल मेहता परिवार हिम्मतनगर ने एवं मनहर प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्रीमती नाथीबाई शांतिलाल टाया परिवार मलाड़ ने किया।

विधि अध्यक्ष के रूप में श्री पार्श्वनाथ भगवान को श्री प्रेमचन्द बजाज, कोटा ने विराजमान किया। श्री कुंदकुंद आचार्य के चित्र का अनावरण श्रीमती हर्शाबेन महेन्द्रभाई कारभारी, अहमदाबाद एवं गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के चित्र का अनावरण श्रीमती शांताबेन जयंतीलाल शाह परिवार मुबई द्वारा किया गया।

देश-विदेश से पधारे हुए साधर्मियों के मन-वचन-काय से या रोम-रोम से यही गूँज रहा था 'आया पंचकल्याणक महान-२, जन्म-मरण दुःख क्षय कर, हम भी पायें पद निर्वाण।'

इस अवसर पर महामंत्री श्री बसंतभाई दोसी, व मुख्य संयोजक श्री महीपाल ज्ञायक ने समागत समस्त अतिथियों ने दोपहर में इन्द्र-इन्द्राणियों

द्वारा यागमंडल विधान के माध्यम से सर्व पूज्य पदों की अर्चना की।

रात्रि में पं शैलेशभाई तलोद व डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर के मार्मिक प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। ब्र. हेमन्तभाई गांधी के कुशल निर्देशन में पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के जीवन पर आधारित कहान क्रमबद्धकथा वी.सी.डी. का विमोचन भी भव्यता के साथ किया गया।

दिनांक २५ नवम्बर को प्रातःकाल पं. राजेन्द्रकमारजी जबलपुर, के वैराग्य गर्भित अध्यात्मरस से भरपूर प्रवचन से गर्भकल्याणक के मंगलदिवस का शुभारंभ हुआ। तत्पश्चात् जिनेन्द्रभगवान की आराधना की गई। गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनोपरान्त पं. वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, व डॉ. उत्तमचन्दजी जैन के प्रवचन का लाभ प्राप्त हुआ। गर्भकल्याणक की इन्द्रसभा के बाद दोपहर में भव्य घटयात्रा निकाली गई व वेदी, मन्दिर, शिखर कलश शुद्धि की गई। गर्भकल्याणक के अवसर पर श्री पवन जैन अलीगढ़, श्री अजितप्रसाद जैन दिल्ली पं अशोककुमार लुहाड़िया मंगलायतन, डॉ. किरीटभाई गोसालिया अमेरिका की उपस्थिति में सौधर्म इन्द्र श्री अजित जैन परिवार द्वारा पं. ऋषभकुमार शास्त्री के निर्देशन में डॉ. विवेक जैन छिंदवाड़ा द्वारा रचित भजनों की श्रृंखला मधुवन महोत्सव के नाम से सी. डी. का विमोचन किया गया।

विशेष ध्यातव्य यह है कि शाश्वत सिद्धभूमि पर आयोज्य इस पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में दो दिन पूर्व से ही लगभग १००० भाई-बहिन उपस्थित हो चुके थे एवं गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन के अतिरिक्त पं. विमलचन्दजी झांझरी, उज्जैन, पं ज्ञानचन्दजी सोनागिरि, डॉ. उत्तमचन्दजी जैन छिंदवाड़ा, ब्र. सुमतप्रकाशजी, खनियांधाना, पं. राजकुमार शास्त्री 'ध्रुवधाम' बांसवाड़ा आदि विद्वानों के विविध प्रवचनों का लाभ प्राप्त कर रहे हैं।

दिनांक २४ नवम्बर से यह भक्ति-प्रवचन की सरिता २९ नवम्बर तक अध्यात्म के गहन रहस्यों का उद्घाटन करती हुई प्रवाहित होती रहेगी व इस भावना से विराम लेगी कि अब श्री कुन्दकुन्द कहान नगर में प्रतिदिन गुरुदेवश्री द्वारा उद्घाटित तत्त्वज्ञान की धारा अविरलरूप से प्रसारित होती रहेगी।

देश का सारा ही मुमुक्षु समाज इस मोक्ष के प्लेटफार्म पर एकत्र हुआ है, यह मुमुक्षु महा सम्मेलन का शुभारंभ है।

रागधारा मजबूरी है।
ज्ञानधारा मजबूती है।।

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन आत्मार्थी ट्रस्ट, भीलवाड़ा द्वारा आयोजित
पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर एवं
तीर्थधाम मंगलायतन, अलीगढ़ के संयुक्त निर्देशन में

श्री १००८ आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव

(सोमवार, २४ दिसम्बर से रविवार ३० दिससम्बर तक)

:: कार्यक्रम स्थल ::

महावीर स्कूल क्रीड़ा स्थल

अरिहन्त हॉस्पिटल के पास, पी.एन.टी कॉलोनी रोड,
शास्त्रीनगर-भीलवाड़ा

सम्पर्क सूत्र- महाचन्द सेठी 9680486798
अशोक सेठी 9829083656, पदमकुमार अजमेरा 9413200754

श्रीमती विनोद जैन की पुण्य स्मृति में श्री श्याम शाह की ओर १०००/रुपये प्राप्त हुये। धन्यवाद।

समाचार जगत -

अहिंसा अभियान का सफल संचालन

खडैरी- पं. टोडरमल जैन युवा शास्त्री परिषद् के आयोजकत्व में खडैरी द्वारा भगवान निर्वाण महोत्सव के अवसर पर अहिंसा अभियान चलाया गया। अभियान के अन्तर्गत खडैरी, गूंगरा कलां, निबोरा, बम्होरी, मुहली, केरबना, पथरिया, सिंहेरा, बटियागढ़, मगरोन, हटा आदि क्षेत्रों के विद्यालयों व ग्रामीणों के मध्य पटाखा फोड़ने से होने वाली हानियों की जानकारी दी। लगभग ७०० छात्रों ने पटाखा न फोड़ने का संकल्प लिया।

सम्पूर्ण कार्यक्रम का संयोजन पं. पंकज शास्त्री ने व सहयोग अंकित शास्त्री 'ध्रुवधाम' का रहा।